

## जनपद गाजियाबाद के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

नरेंद्र पाल

(सहायक आचार्य)

आई०ए०एम०आर० बी० एड० कॉलेज

दुहाई, गाजियाबाद

- **शोध सार :-** पारिवारिक वातावरण की हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पारिवारिक वातावरण ही बालक के विकास की दिशा को तय करता है। सामंजस्य पूर्ण वातावरण ही बालक के विकास में सहायक होता है जिससे व्यक्ति आगे बढ़ता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन है। इस अध्ययन में उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में जनसंख्या के रूप में गाजियाबाद जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को लिया गया है तथा न्यादर्श के रूप में जनपद गाजियाबाद में लोनी ब्लॉक, राजापुर ब्लॉक, भोजपुर ब्लॉक, मुरादनगर ब्लॉक में से मुरादनगर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा आठ के छात्र- छात्राओं को लिया गया है। न्यादर्श का चयन आकस्मिक एवं उद्देश्यपरक विधि से किया गया है। न्यादर्श में 400 विद्यार्थियों को जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को 20 उच्च प्राथमिक विद्यालयों से आकस्मिक एवं उद्देश्यपरक विधि द्वारा लिया गया है। उपकरण के रूप में डॉ० कुमारी बीना शाह 1990 द्वारा निर्मित मानकीकृत पारिवारिक वातावरण मापनी एवं छात्र-छात्राओं के कक्षा आठ में अध्ययनरत गत वर्ष की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में माता-पिता का उपलब्धि में अतिशय योग होता है। ऐसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में नियंत्रण, विचारों की अस्वीकृति, त्याग एवं नियंत्रित पारिवारिक प्रतिकूल परिस्थितियां होती हैं ऐसे वातावरण में प्रत्येक बालक की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है अर्थात् भिन्न-भिन्न पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से भिन्न होती है। अतः विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

**बीज शब्द :- उच्च प्राथमिक स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण।**

### ■ **आमुख :-**

मानव के जीवन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा वह ज्योति है जो मानव के जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार में उजाला प्रदान करती है। शिक्षा से ही मानव के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है तथा मानव के विकास से ही परिवार, समाज व संपूर्ण राष्ट्र का विकास होता है। शिक्षा का प्रथम उद्देश्य बालक को संस्कार युक्त एवं श्रेष्ठ नागरिक बनाना है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि कई तथ्यों पर निर्भर करती है जैसे- मनोवैज्ञानिक तथ्य, समाजशास्त्रीय तथ्य, पर्यावरणीय तथ्य इत्यादि। पारिवारिक वातावरण बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि सभी अंगों पर प्रभाव डालता है। बालक का चहुंमुखी विकास तभी संभव होता है जब उसे अच्छे वातावरण में रखा जाए।

**रूसो** के अनुसार- “बालक की शिक्षा में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार ही बालक को सर्वोत्तम शिक्षा दे सकता है। यह एक ऐसी संस्था है जो मूल रूप से प्राकृतिक है”।

मानव वास्तव में अपने वंश परंपरा की उपज है जिसमें वह जीवन यापन करता है। बालक के जन्म से मृत्यु शैय्या तक प्रत्येक मनुष्य के जीवन में परिस्थितियां व समस्याएं निरंतर उत्पन्न होती रहती हैं। और वह उनका संतोषजनक आनंदमय हल खोजने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है। सामान्यतः यह अनुभव किया जाता है कि कुछ बालक अपने अध्ययन, व्यवहार और निरंतर क्रियाओं में भली-भांति योगदान करते हैं जबकि कुछ बालक उपरोक्त क्रियाओं में निराशाजनक योगदान करते हैं। ऐसा होने का प्रमुख कारण बालकों में विस्तृत रूप से पारिवारिक वातावरण में भिन्नता का पाया जाना है। जिसमें वे आते हैं। शिशु एकमात्र इसी के द्वारा अपना जीवन प्रारंभ करता है। संभवतः परिवार ही व्यक्ति के व्यवहार परिवर्तन में सबसे अधिक योगदान करता है। बालक पारिवारिक सदस्यों माता-पिता, संबंधियों आदि के व्यवहार से बहुत अधिक सीखता है। वह उन गतिविधियों से बचने का प्रयास करता है जिनसे वह दंडित किया जा सकता है या जो परिवार में बुरी समझी जाती हैं। बालक पर परिवार के प्रभाव को प्रकाशित करने के लिए **रैमन्ट 1929** ने व्याख्या दी कि दो बालक एक ही कक्षा में उपस्थित रहते हैं, एक ही अध्यापक एवं विद्यालय के प्रभाव में रहते हैं और एक ही प्रकार की क्रिया कर सकते हैं परंतु विभिन्न परिवार से आने के फलस्वरूप उनके ज्ञान, अभिरुचियों, भावाभिव्यक्ति एवं नैतिक भाव भिन्न होते हैं।

**फ्रोबेल** के अनुसार “फ्रोबेल ने घर को महत्वपूर्ण स्थान दिया है उनका यह कथन- माताएं आदर्श अध्यापिका होती हैं। और घर द्वारा दी जाने वाली अनौपचारिक शिक्षा ही सबसे अधिक प्रभावशाली एवं स्वाभाविक है”।

घर परिवार बालक की प्रथम पाठशाला और अभिभावकों का आचरण उनके लिए प्रथम पुस्तक के समान हैं जिसको पढ़ कर वे जीवन भर के लिए उसी प्रकार के बन जाते हैं जिस प्रकार प्रारंभ में याद की हुई वर्णमाला तथा गिनती बच्चों के साथ जीवन भर बनी रहती है। इस प्रकार परिवार में से ग्रहण किए हुए उनके संस्कार जीवन भर नहीं जाते। फिर चाहे वे अच्छे हो या बुरे। बच्चों में आसपास के वातावरण से स्वतः; सीखने की स्वाभाविक क्षमता होती है। सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों के वातावरण को व्यापक संदर्भ में समझने की जरूरत बताई गई है। साथ ही परिवार, समाज तथा विद्यालय का वातावरण सीखने योग्य बनाने पर जोर देता है। वातावरण एक ऐसा शिक्षक है जो मनुष्य को हर परिस्थिति में ढलना सिखाता है। परिवार का वातावरण, माता पिता के आपसी संबंध एवं बच्चों से उनके व्यवहारों का बच्चों के व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव डालता है। विभिन्न प्रकार के वातावरण द्वारा बालकों की शैक्षिक उपलब्धि भिन्न-भिन्न होती हैं।

यह कहा जाता है कि जिन माता पिता का अपने बच्चों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध होता है तथा बच्चों को उचित सहानुभूति एवं प्यार मिलता है उनके बच्चों की मानसिक स्वास्थ्य में निश्चित रूप से वृद्धि होती है। उचित परिवार बालक के लिए अमूल्य संस्था होती है। उचित परिवारों के सभी सदस्य एक दूसरे का सहयोग तथा आदर करते हैं। उन परिवारों में मानसिक तनाव कम रहता है और इनका सीधा प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। ऐसे परिवारों के बालक पढ़ाई में रुचि लेते हैं और कठिन पाठ को भी सरलता से सीख लेते हैं। ऐसे बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है। इसके विपरीत जिन परिवारों में माता-पिता व अन्य सदस्य अनैतिक होते हैं या परिवार के सदस्य आपस में लड़ते- झगड़ते हैं, बालक को परिवार के सदस्यों द्वारा सदैव डांटा-फटकारा जाता है, दोष निकाला जाता है और आलोचना की जाती है तो वे अत्यधिक उदासीन और चिंता-ग्रस्त हो जाते हैं और वे परिवार से असमायोजित होकर कुसंगति में पड़ जाते हैं और ऐसे बालक समस्यात्मक बन जाते हैं। इन कारणों से बालक विद्यालय के कार्यों में ध्यान नहीं दे पाते हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की हो जाती है।

पूर्व अध्ययनों से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जैसा कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता की शैक्षिक योग्यता, आर्थिक स्थिति और घर की अवस्थिति के साथ संबंधित और महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया।

'मंजू शर्मा और आसमा खातून' 2020 ने पाया कि छात्राओं के पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनके भावी जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। 'सिंह डा० रजनी' 2018 ने पाया कि वातावरण के विभिन्न कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। 'कुमार अनिल एवं गुप्ता रेनु' 2016 ने पाया कि शिक्षित एवं अशिक्षित परिवार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। 'गुप्ता मधु और रानी सुरेखा' 2015 ने पाया कि घरेलू वातावरण के कुछ आयामों का शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक रूप से प्रभाव पड़ता है जबकि कुछ आयामों का शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। 'खान आलिया' 2014 ने पाया कि पारिवारिक वातावरण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। 'चौधरी डा० नंदकिशोर' 2013 ने पाया कि विद्यालय अध्ययनरत किशोरों की पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक सहसंबंध है। 'कुमारी पी० लावण्या' 2012 ने पाया कि सकारात्मक दोस्त, माता-पिता के अच्छे रिश्ते तथा विद्यालय वातावरण बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। 'उभर एस. एस. व अन्य' 2011 ने पाया कि उच्च सामाजिक स्तर तथा परिवार में प्रेम-युक्त संबंध शैक्षिक उपलब्धि को धनात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। 'भोला' 2010 ने पाया कि गृह वातावरण के कुछ कारकों का शैक्षिक निष्पत्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जबकि कुछ कारकों का शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई प्रभाव नहीं होता है। 'कौर राणा एवं कौर' 2009 ने पाया कि पारिवारिक वातावरण के कुछ आयामों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सहसंबंध है तथा कुछ आयाम जैसे सामाजिक पृथक्करण, अधिकारों से वंचन आदि का आत्म प्रत्यय के साथ ऋणात्मक सहसंबंध था।

■ **अध्ययन का शीर्षक** :- जनपद गाजियाबाद के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

■ **अध्ययन के उद्देश्य** :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है -

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

■ **परिकल्पनाएँ** :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है -

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

■ **शोध प्रविधि** :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में गाजियाबाद जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को जनसंख्या हेतु चयनित किया गया है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु गाजियाबाद जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कुल 4 ब्लॉक जिसमें राजापुर ब्लॉक, लोनी ब्लॉक, मुरादनगर ब्लॉक, और भोजपुर ब्लॉक में से मुरादनगर ब्लॉक के 20 परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में 400 विद्यार्थियों में जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राओं का चयन उद्देश्यपूर्ण एवं आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधियों द्वारा किया है।

परीक्षण संबंधी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्य की दृष्टि से मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है जिसमें शोधकर्ता ने पारिवारिक वातावरण (स्वतंत्र चर) मापने हेतु डॉ० कुमारी बीना शाह 1990 द्वारा निर्मित मानकीकृत पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रयोग किया है जिसमें कुल 90 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न दो अंक का है तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि (आश्रित चर) मापने हेतु कक्षा आठ के विद्यार्थियों के गत वर्ष की वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रतिशत सम्मिलित किया गया है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन और क्रांतिक अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है।

### ■ आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

H<sub>1</sub> :- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

#### सारणी 1 :-

उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों के पारिवारिक वातावरण में अंतर को दर्शाते हुए क्रांतिक अनुपात :-

क्रम स.	चर	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
1.	उच्च उपलब्धि स्तर	150	134.2	23.6	35.01	0.01 (निरस्त)
2.	निम्न उपलब्धि स्तर	50	41.4	12.9		0.05 (निरस्त)

0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य = 2.581

0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य = 1.961

स्वतंत्रता के अंश :-  $N_1 + N_2 - 2 = 150 + 50 + 2 = 198$

■ **विवेचना** :- तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण मापनी पर उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह के छात्रों के माध्य प्राप्तांक क्रमश 134.2 और 41.4 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमश 23.6 और 12.9 प्राप्त हुआ तथा इनके मध्य क्रांतिक अनुपात मान 35.01 प्राप्त हुआ। टी मूल्य तालिका में 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर  $150 + 50 - 2 = 198$  स्वतंत्रता के अंश पर इनका मान क्रमश 2.581 और 1.961 है। जोकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान से कम है अतः यह परिकल्पना 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है की उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर है अतः पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

H<sub>2</sub> :- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

#### सारणी 2 :-

उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में अंतर को दर्शाते हुए क्रांतिक अनुपात :-

क्रम स.	चर	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता का स्तर
1.	उच्च उपलब्धि स्तर	140	127.14	20.7	28.08	0.01 (निरस्त)
2.	निम्न उपलब्धि स्तर	60	47	17.0		0.05 (निरस्त)

0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य = 2.581

0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य = 1.961

स्वतंत्रता के अंश  $N_1 + N_2 - 2 = 140 + 60 - 2 = 198$

तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण मापनी पर उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह की छात्राओं के माध्य प्राप्तांक क्रमश 127.14 और 47.33 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन 20.7 और 17.0 प्राप्त हुआ तथा इनके मध्य क्रांतिक अनुपात मान 28.50 प्राप्त हुआ।

टी मूल्य तालिका में 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर  $140 + 60 - 2 = 198$  स्वतंत्रता के अंश पर इनका मान क्रमश 2.581 और 1.961 है। जोकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान से कम है अतः यह परिकल्पना 0.05 और 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर है अतः पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

■ **निष्कर्ष** :- प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है अर्थात् उच्च उपलब्धि स्तर एवं निम्न उपलब्धि स्तर वाले विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण एक दूसरे से भिन्न है।

अतः निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण मापनी के कुछ आयामों का जैसे- पारिवारिक स्वतंत्रता, बच्चे पर पारिवारिक ध्यान, पारिवारिक स्वीकृति, बच्चे के प्रति उत्साह, अपेक्षा, बच्चे के प्रति प्यार, बच्चे के प्रति न्याय एवं खुला संचार बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक रूप से प्रभाव पड़ता है तथा वातावरण मापनी के कुछ आयामों का जैसे पारिवारिक नियंत्रण, पारिवारिक उपेक्षा, अस्वीकृति, बच्चे के प्रति उदासीनता, त्याग, बच्चे के प्रति पक्षपात, एवं नियंत्रित संचार का बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक रूप से प्रभाव पड़ता है।

अतः; जिन बालकों के परिवार में पारिवारिक स्वतंत्रता, छात्रों की शैक्षिक गतिविधियों पर ध्यान, बच्चे की हर जरूरतों को पूरा करना, माता-पिता द्वारा छात्रों के लिए अपने कर्तव्यों की प्रधानता, छात्रों की योग्यता, रुचि एवं अन्य सकारात्मक शैक्षिक गतिविधियों को स्वीकार करने का भाव, छात्रों की शैक्षिक एवं अन्य गतिविधियों पर विश्वास, माता-पिता के द्वारा अपने बालकों के प्रति न्याय की भावना, बालकों की प्रति अपेक्षा रखना, माता-पिता का छात्रों की शैक्षिक एवं अन्य गतिविधियों में उत्साह रखना, प्यार एवं सहानुभूति पूर्वक व्यवहार, परिवार या माता-पिता द्वारा अपने ज्ञान, अनुभव एवं सलाह को छात्रों के साथ आदान-प्रदान किया जाता है ऐसे बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है।

इसके विपरीत जिन बालकों के परिवार में पारिवारिक नियंत्रण, माता-पिता द्वारा छात्रों की गतिविधियों पर ध्यान न देकर उनकी उपेक्षा करना, माता-पिता द्वारा छात्रों की रुचि को ध्यान में न रखकर उनकी आज्ञा के अनुकूल ही कार्य करना, बालकों को रुचि के अनुसार कार्य करने की स्वीकृति ना मिलना, माता-पिता का बालक पर विश्वास न होना, माता-पिता द्वारा बालकों में पक्षपात की भावना रखना, छात्रों की गतिविधियों के प्रति उदासीनता, माता-पिता द्वारा बालकों के प्रति त्याग की भावना तथा परिवार द्वारा अपने ज्ञान एवं अनुभव को छात्रों के साथ आदान-प्रदान नहीं किया जाता ऐसे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की हो जाती है।

### “संदर्भ सूची”

- **सिंह डॉ गया** 2012 अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अध्यापक- केवलानंद बी० एड० कॉलेज दारानगर गंज बिजनौर, प्रकाशक- विनय रखेजा C/0 आर लाल बुक डिपो।
- **जोशी मनीषा शर्मा, कुमार डॉ राकेश** 2012 शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- **सरीन और सरीन** 2007 शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर. आगरा।
- **मंजू शर्मा, आसमा खातून** 2020 'छात्राओं के पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनके भावी जीवन पर प्रभाव का अध्ययन' National **General of Multidisciplinary Research and Development**. Volume-5, page no. 30-32.
- **यादव डॉ सियाराम, सिंह अमित** 2018 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक प्रभाव का अध्ययन' I.J.S.R.S.T / Volume-4, page no. 581-585.
- **सिंह डॉ रजनी** 2018 'पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का पथ विश्लेषणात्मक अध्ययन'। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी- आगरा) 'शोध प्रबंधन की रूपरेखा' page no. 2-7.
- **यादव डॉ रेखा** 2017 'वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का उनके मूल्यों तथा शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन'। **International journal of multidisciplinary research** volume-3, June 2017, I.S.S.N 2395-6968.